प्रस्तावना

प्रस्तावना

ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में भारतवर्ष अनादिकाल से अग्रगण्य रहा है, जिसके प्रमाण स्वरूप प्राचीन वैदिक वांगमय आज भी हमारे सम्मुख उपस्थित हैं। भारतीय वैदिक वांगमय वेदों का स्थान सर्वोपरि है। **"विद ज्ञाने"** धातु से वेद शब्द की निष्पत्ति होती है। वेद भारत की संस्कृति, सभ्यता, इहलौकिक–पारलौकिक ज्ञान, अनेक प्रकार के विज्ञानों के आधारभूत स्तम्भ हैं। वेदों को **"अपौरुषेय"** और **"श्रुति–वांगमय"** नाम से भी परिभाषित किया जाता है।

वेद को साक्षात् आदिनारायण का स्वरूप होने की संज्ञा प्रदान की जाती है। क्योंकि यह सूक्ति कहती है–

वेदप्रणिहितो धर्म ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः।

वेदो नारायणः साक्षात्स्वयंभूरिति सुश्रुमः।।[1]

वेदों में आदि–दैविक, आदि–भौतिक ज्ञान के साथ ही आध्यात्मिकता की वैज्ञानिकता प्रतिपादित की गई है। अर्थात् वेदों में भौतिक ज्ञान–विज्ञान के साथ आध्यात्मिक, आत्मतत्व, परब्रह्म एवं पारलौकिक सम्बन्धी विज्ञान भी समाहित है।

प्राचीन ऋषि–मुनियों ने वेद के मन्त्रों का दर्शन कर उनके ज्ञान–विज्ञान का विस्तार किया। विस्तारीकरण की प्रक्रिया में वेदों के **"छन्द, कल्प, ज्योतिष, निरुक्त, शिक्षा एवं व्याकरण"** की रचना हुई जो कि क्रमशः वेद के **"पैर, हाथ, नेत्र, कान, नासिका और मुख"** नामक छः अंग माने जाते हैं। वेद के इन छः अंगों में ज्योतिष शास्त्र प्रमुख अंग नेत्र के रूप में प्रतिष्ठित है, जिसके सन्दर्भ में आचार्यों ने लिखा है कि– **"ज्योतिषामयनं चक्षुः"**[2] तथा **"वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्योतिषं"**[3] ।

---

[1] श्रीमद्भागवत महापुराण, षष्ठ स्कन्ध, प्रथम अध्याय, श्लोक सं0 40, पृ0 सं0 251

[2] वेदांग ज्योतिष, प्रथमोध्यायः, श्लोक सं0 2

[3] सिद्धान्त शिरोमणि, मध्यमाधिकार, कालमानाध्याय, श्लोक सं0 11

ज्योतिष शास्त्र को आचार्यों ने काल का विधायक शास्त्र कहा है। काल पर प्रभावी होने के कारण अनादिकाल से ज्योतिष शास्त्र सम्पूर्ण जड़–चेतन जगत पर समग्र रूप से प्रभावशाली है।

प्राचीन काल में ज्योतिष शास्त्र का क्षेत्र अत्यन्त सीमित था, इसका उपयोग केवल वेद विहित यज्ञों को सम्पादनार्थ उचित–अनुचित काल जानने के लिए किया जाता था। किन्तु कालान्तर में ज्योतिष के अठ्ठारह प्रवर्तक ऋषियों एवं आचार्यों के द्वारा इसका विस्तार किया गया। उन्होंने इस शास्त्र को **''सिद्धान्त, संहिता व होरा''** नामक तीन स्कन्धों में विभाजित किया। इन्हीं तीन स्कन्धों पर हो रहे निरन्तर शोधों के कारण वर्तमान में ज्योतिष शास्त्र **''जातक, ताजिक, प्रश्न, स्वप्न, शकुन, सामुद्रिक, मुहूर्त, स्वर, वास्तु''** आदि बहुस्कन्धात्मक के रुप में सुविख्यात हो गया है।

ज्योतिष शास्त्र का जातक विभाग व्यावहारिक जगत के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस विभाग में जन्म–पत्रिका, वर्ष–पत्रिका, प्रश्न कुण्डली के आधार पर खगोलीय पिंडों और पृथ्वी पर स्थित मानव जीवन के बीच संबंधों का अध्ययन किया जाता है। तथा मानव जीवन में घटित होने वाले शुभाशुभ एवं घटित होने वाली घटनाओं का पूर्वानुमान किया जाता है।

मानव जीवन पर ग्रहों के प्रभाव होता है इस बात को ज्योतिष शास्त्र तो मानता ही है जिसके सन्दर्भ में फलित ग्रन्थों में विस्तार से अनेकों सूत्र प्रतिपादित हैं। किन्तु वर्तमान में भी अनेकों वैज्ञानिकों ने भी मानव जीवन पर ग्रहों के प्रभाव को माना है।

आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा भी ज्योतिष के सिद्धान्तों पर अनेक शोध किये हैं और उन पर पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं, जिनमें **मिशेल गौक्वेलिन** ने **''द कास्मिक इन्फलूयेन्स ऑन ह्यूमन बिहेवियर''** **''द कॉस्मिक क्लॉक''** एवं **''मार्स इफेक्ट''**[4] पुस्तकें व शोध पत्र लिखे, जिनमें उन्होने मानव जीवन, ज्योतिष एवं सांख्यकी के बीच सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया तथा मंगल के प्रभावों की जाँच करते हुए पाया कि एथलीटों एवं सैन्यकर्मियों में मंगल ग्रह की स्थिति

---

[4] https://cyclesresearchinstitute.org/subjects/cycles-astrology/gauguelin/

महत्वपूर्ण थी[5], **निकोलस कल्पेपर** द्वारा लिखित **''द कम्पलीट हर्बल''** पुस्तक में उन्होंने औषधीय पौधों, मानव शरीर के अंगों व ग्रहों के बीच सम्बन्धों को प्रस्तुत करते हुए मंगल को रक्त और सूजन, चन्द्रमा को जल से सम्बन्धी विषयों का कारक एवं पौधों के औषधीय उपयोगों को ज्योतिष के सिद्धान्तो से संयोजित किया। उनकी यह पुस्तक आज भी वैकल्पिक चिकित्सा के रूप मे सन्दर्भित है।[6] इसके अतिरिक्त **डॉ0 बी0 वी0 रमन, रुडोल्फ स्टीनर, डॉ0 के0 एस0 चरक, कार्ल गुस्ताव जंग, फेड्रिक जार्ज हिल्टन,** आदि ने भी ज्योतिष फलादेशों को लेकर अनेक शोध किये हैं।

होरा शास्त्र के अन्तर्गत जन्म समय के आधार पर जन्मपत्रिका का निर्माण किया जाता है। इसमें बारह कोष्ठक होते हैं जिनको ज्योतिष शास्त्र में भाव नाम से सम्बोधित किया जाता है। इन्हें क्रमशः तनु, धन, सहज, सुख, सुहृत, सुत, रिपु, जाया, मृत्यु, धर्म, कर्म, आय, व्यय नाम से जाना जाता है।[7]

जन्मकाल में पूर्वी क्षितिज पर जो राशि उदित होती है उसे प्रथम भाव में स्थापित कर तदनन्तर व्युत्क्रम से अन्य राशियों को जन्मकुण्डली के द्वादश भावों में रखा जाता है। राशियां स्थापित करने के पश्चात् जो ग्रह जिस राशि पर आकाश में स्थित होता है, उसको उसी राशि के अंक के कोष्ठक में लिखा जाता है। इस प्रकार जन्म समय के आधार पर जन्मपत्रिका का निर्माण किया जाता है, जो कि मानव जीवन पर पड़ रहे ग्रहों के शुभाशुभ प्रभावों के अध्ययन का मुख्य आधार स्तम्भ होती है। यह व्यक्ति के जन्मकालिक आकाशीय राशि–ग्रह–नक्षत्रों का मानचित्र होता है। जन्मपत्रिका में सभी ग्रह एवं बारह भाव स्वयं में महत्पूर्ण होते हैं। यद्यपि सभी ग्रह एवं भाव अरिष्ट निर्धारण में महत्वपूर्ण होते हैं किन्तु लग्न, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, द्वादश भाव एवं सूर्य, चन्द्र, लग्नेश, गुरु, शुक्र व शनि की बालारिष्ट में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध **''बालारिष्ट समीक्षा''** मूलतः ज्योतिष शास्त्र में वर्णित बालारिष्ट योगों एव उनमें उल्लिखित भावों व ग्रहों पर केन्द्रित है। शोध में उन सभी ग्रह–योगों का अध्ययन

---

[5] https://www-astrology--and--science-com.translate.goog/g-hist2.htm?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=wapp
[6] https://en.wikipedia.org/wiki/Nicholas_Culpeper
[7] लघुजातकम्, राशिप्रभेदाध्याय, श्लोक सं0 15

किया जा रहा है जिनके कारण बच्चों को शून्य से बारह वर्षों तक मृत्यु तुल्य कष्ट या मृत्यु का भाजन बनना पड़ता है।

क्योंकि जीव को देह में आने के पश्चात् सांसारिक सुख भोगने के लिए सर्वप्रथम आयु की आवश्यकता होती है। यदि प्राणी के पास आयु होगी तब ही वह अन्य राजयोगों के माध्यम से सांसारिक सुखों का भोग कर पाएगा, आयुहीन व्यक्ति के लिए अन्य फलाफल कथन निष्प्रयोजन होता है, अर्थात् सर्वप्रथम आयु का निर्धारण करना अति आवश्यक होता है।[8]

आयुनिर्धारण में भी प्रारम्भ के बारह वर्षों तक गणितीय विधियों से आयु का निश्चय किया जाना सम्भव नहीं होता है। अतः ज्योतिष के आचार्यों ने अपने ग्रन्थों बारह वर्ष तक आयु निर्धारण हेतु अनेकों ग्रहयोगों को प्रस्तुत किया है जिन्हें बालारिष्ट योग नाम से जाना जाता है।[9]

बालारिष्ट योगों के कारण जातक को बारह वर्ष तक गम्भीर रोगों व मृत्यु तुल्य कष्टों से गुजरना पड़ता है, कई बार इन योगों की प्रबलता इतनी अधिक होती है कि बच्चे की मृत्यु तक हो जाती है।

बालारिष्ट योगों से मृत्यु हो यह आवश्यक नहीं है, बालारिष्ट योगों के साथ यदि बलवान बालारिष्ट–भंग योग भी हों तो जातक की जीवन रक्षा हो जाती है। बालारिष्ट के कारणों को ज्ञात करने के पश्चात् यदि उसके यन्त्र, तन्त्र, मन्त्र, औषधी जैसे शास्त्रीय उपाय किये जाते हैं तो शिशु के जीवन की रक्षा की जा सकती है, ऐसा विद्वानों का मत है।[10]

विषय ग्रहण में हेतु

त्रिस्कन्ध ज्योतिष शास्त्र का आधार प्रथम स्कन्ध संहिता है, किन्तु वर्तमान समय में समाज की अधिकांश रुचि ज्योतिष शास्त्र के तृतीय स्कन्ध होरा में है। इसका सामान्य कारण यह भी है कि यह स्कन्ध व्यष्टिगत शुभाशुभ का विचार करके तदनुसार फलादेश करते हुए व्यक्ति का मार्गदर्शन करता है। प्रत्येक व्यक्ति में अपने साथ घटित होने वाले शुभाशुभ को जानने की

[8] प्रश्नमार्ग, अध्याय 09, श्लोक सं0 03, पृष्ठ सं0 129
[9] फलदीपिका, आयुर्भावाध्याय, श्लोक सं0 03, पृष्ठ सं0 250
[10] फलदीपिका, आयुर्भावाध्याय, श्लोक सं0 05, पृष्ठ सं0 251

उत्कण्ठा होती है। अतः स्पष्ट रुप से यदि यह कहा जाए कि होरास्कन्ध अन्य स्कन्धों की तुलना में मानव जाति के लिए अधिक व्यावहारिक एवं उपयोगी है इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

परिवार का पैतृक कार्य ज्योतिष होने के कारण ज्योतिष के प्रति रूचि का होना स्वाभाविक था। तथा बाल्यकाल में ही ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान अपने पितामह से ही प्राप्त करने पश्चात् पारम्परिक रुप से गुरुकुल में प्रवेश ग्रहण कर पूर्व मध्यमा प्रथम (9^{th}) से लेकर आचार्य (M. A.) पर्यन्त विधिवत् ज्योतिष की शिक्षा ग्रहण की। अध्ययन काल में ही फलित ज्योतिष में सन्निहित सभी सूक्षमताओं को जानने का यथा सम्भव प्रयास किया। तथा इसमें समाहित विषयों पर गूढ़ अध्ययन करने की उत्कण्ठा हुई, जिसके कारण शोध कार्य में रूचि बढ़ी। शोध की उत्कण्ठा के कारण अनेक विश्वविद्यालयों के ज्योतिष विभागों में गया एवं अनेक विद्वानों से सम्पर्क हुआ। इसी क्रम में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में गया और वैदिक ज्योतिष विभाग के सहायक आचार्य डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी जी से सम्पर्क हुआ। उन्होंने अनेकों विषय ऐसे प्रतिपादित किये जिन पर शोध किया जा सकता है, तथा शोधकार्य हेतु प्रेरित किया।

ज्योतिष शास्त्र में अनेकानेक विषय हैं जिनपर शोध की आवश्यकता है। किन्तु **''बालारिष्ट समीक्षा''** विषय ग्रहण करने के हेतु दो प्रमुख कारण हैं।

प्रथमदृष्ट्या तो यह है कि– आयु एक ऐसा विषय है जिसकी आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को होती है, एवं आयु पर ही सबकुछ निर्भर करता है। अर्थात् दीर्घायु मनुष्य ही आगे के शुभाशुभ का भोग कर सकता है, आयु हीन के लिए तो अन्य प्रकार के सभी शुभ एवं राजयोगादि निष्फल होते हैं। ज्योतिष शास्त्र के आचार्यों गणितागत आयु को प्रायः बारह वर्षों के पश्चात् प्रभावी माना है। अतः प्रश्न उठता है कि बारह वर्ष से पूर्व किस विधि से आयु निर्धारण किया जाए ? जिसका उत्तर होरा ग्रन्थों में ''बालारिष्ट–योगों'' के नाम से प्रस्तुत किया गया है, अर्थात बारह वर्ष से पूर्व आयु का निर्धारण करने हेतु जन्मांग में बालारिष्ट योगों का अध्ययन करना चाहिए।

दूसरा कारण यह है कि– वर्तमान में शिशुओं की सुरक्षा हेतु चिकित्सादि, चिकित्सालयों में प्रसव, मातृ–शिशु सुरक्षा हेतु चिकित्सा एवं मातृ–शिशु कल्याण जैसी अनेकों योजनाएँ भारवर्ष में चल रही हैं। उसके पश्चात् भी शिशुओं की मृत्यु हो रही है। अतः मस्तिष्क में सहसा यह विचार प्रस्फुटित होता है कि ऐसा क्या कारण है जिससे कि चिकित्सादि की समुचित व्यवस्थाओं

के उपरान्त भी शिशुओं की मृत्यु हो रही है? तथा क्या कुछ ऐसे समाधान भी हैं जिससे शिशुओं के प्राणों की रक्षा करनी सम्भव हो सके? इन्हीं प्रश्नों के समाधानार्थ शोध हेतु इस विषय जिसका शीर्षक **''बालारिष्ट समीक्षा''** है का चयन किया गया है।

शोध प्रविधि

शोध का अभिप्राय–

शोध को अन्वेषण, गवेषणा, खोज, अनुसन्धान आदि अनेक नामों से व्याख्यायित किया जाता है, जिसका अर्थ है कि पूर्व में स्थित ज्ञान को वर्तमान में लागू करते हुए किसी समस्या के समाधान की खोज करना, नवीन तथ्यों की खोज करना अथवा पूर्व में खोजे हुए तथ्यों का मन्थन व मूल्यांकन करना होता है। इस सन्दर्भ में कालिदास का कथन है कि–

पुराणमित्येव न साधु सर्वं, न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।

सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते, मूढ़ः परप्रत्ययनेयबुद्धिः।।[11]

अर्थात् काव्य (ज्ञान) न ही पुराना होने से उत्तम होता है एवं न ही नवीन होने पर उपहासनीय होता है। विद्वान लोग परीक्षण करने के उपरान्त उत्तम का ग्रहण करते हैं, दूसरों के विश्वास के अधार पर मत बनाना मूर्खों का कार्य होता है।

शोधकार्य हेतु शोधार्थी में जिज्ञासा एवं अनुसंधान किये जा रहे विषय का मौलिक ज्ञान होना अत्यावश्यक होता है।

प्रस्तुत शोधकार्य ज्योतिष के प्राचीन एवं आधुनिक मौलिक ग्रन्थों में सन्निहित बालारिष्ट योगों के अधार पर जन्मांगों पर परीक्षण किया गया, जिनके आधार पर यह ज्ञात किया गया कि जातकों के जीवन में शैशव तथा बाल्यावस्था में किन ग्रहयोगों के कारण मृत्यु तथा मृत्यु तुल्य कष्ट घटित होते हैं। पूर्व निर्धारित योगों में से घटित योगों की व्याख्या के साथ अध्ययन के दौरान प्राप्त नवीन योगों को भी प्रतिपादित किया गया है। इसके अतिरिक्त बालारिष्ट से सम्बन्धित दुष्फलों के निराकरण हेतु बालारिष्टभंग एवं तत्सम्बन्धित शास्त्रीय उपचारों का अध्ययन करते हुए उन्हें भी शोध में समावेशित किया गया।

---

[11] मालविकाग्निमित्रम्, प्रथमोंकः, श्लोक सं0 2, पृ0 सं0 6

शोध की आवश्यकता–

यद्यपि प्राचीन सिद्धान्तों एवं तत्थों की अपनी एक महता अवश्य होती है, किन्तु परिवर्तित समय के अनुसार प्रत्येक विषय में परिष्करण एवं परिमार्जन की निरन्तर आवश्यकता होती है, जिसका अधार शोधकार्य होता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण है कि– प्राचीन ज्ञान को वर्तमान परिपेक्ष्य में लागू करने हेतु उसका निरन्तर परीक्षण, परिमार्जन एवं संशोधन किया जाना आवश्यक है। जिससे कि प्राचीन तत्थ्यों के परिष्कृत रुप से वर्तमान समस्याओं का समाधान किया जा सके।

शिशु–मृत्यु से सम्बन्धित भारतीय ज्ञान परम्परा से महत्वपूर्ण ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ एकीकृत करते हुए, एवं शिशु मृत्यु दर को कम करने हेतु वैज्ञानिकता को समावेश करते हुए ज्योतिष शास्त्र में सन्निहित बालारिष्टयोगों व उससे सम्बन्धित प्राचीन सिद्धान्तों पर शोध की आवश्यकता है।

शोध का सीमांकन–

किसी भी उत्तम शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकडे संग्रहण हेतु क्षेत्र एवं ग्रन्थों का सीमांकन परम आवश्यक होता है, जिससे कि अनावश्यक विषय विस्तार से बचा जा सके।

अतः प्रस्तुत शोधकार्य हेतु होराशास्त्र के प्रमुख दस ग्रन्थों को आधार बनाया गया है। प्रारम्भ में शोध को उत्तराखण्ड राज्य 6 जिलों (देहरादून, हरिद्वार, टिहरी, पौड़ी, रूद्रप्रयाग एवं चमोली) तक सीमित किया गया था।

क्योंकि बालारिष्ट एवं बच्चों की मृत्यु एक अत्यन्त संवेदनशील विषय है। अतः अधिकांश व्यक्तियों द्वारा मृत शिशुओं का विवरण प्रदान नहीं किया जाता है, एवं कुछ लोग भावुक हो जाने के कारण शिशु की मृत्यु की अशुभ घटना का स्मरण करने से बचना चाहते हैं। इस प्रकार के अनेक संवेदनशील कारणों उत्तराखण्ड के निर्धारित स्थानों से पर्याप्त मात्रा में जातकों का जन्म विवरण प्राप्त नहीं हो पाया। जिसके कारण शोध में **''उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण विधि''** के आधार पर कुण्डलियों का संग्रहण प्रायः भारत के कुछ राज्यों एवं बालारिष्ट योगों पर प्रकाशित पुस्तकों से किया गया है।

आंकडे संग्रहण के श्रोत

शोध कार्य हेतु लगभग 200 व्यक्तियों से सर्वेक्षण, प्रश्नावली एवं साक्षात्कार कर उनके शिशुओं के जन्म एवं आवश्यक विवरण को प्राप्त किया गया। जिनमें से अधिकांश जन्मांग एक जैसे थे अतः शोध कार्य में लगभग 82 कुण्डलियों को संग्रहण दोनों प्रकार के (प्राथमिक व द्वितीयक) आँकड़ों के रुप में किया गया है। जिनमें से प्राथमिक आँकडों के रूप में लगभग 55 कुण्डलियों का संग्रहण साक्षात्कार, सर्वेक्षण एवं प्रश्नावलि विधियों से किया गया है, तथा शेष 27 कुण्डलियों को प्रकाशित बालारिष्ट से सम्बन्धित ग्रन्थों से लिया गया है।

द्वितीयक आँकडों के रुप में ज्योतिष के होराग्रन्थों में प्रदत्त बालारिष्ट एवं बालारिष्ट भंग योगों के साथ बालारिष्ट निवारक उपायों को भी संग्रहीत किया गया है।

से निम्नवत प्राप्त हुए–

क्र0 सं0	कार्यालय नाम	पत्रांक संख्या	गत पाँच वर्षों में मृत शून्य से बारह वर्ष तक के बच्चों की संख्या (ग्रामीण / शहरी स्तर पर)					
			स्तर	2020	2021	2022	2023	2024
01.	मुख्य चि0 अ0 टिहरी गढ़वाल	सी0एम0ओ0 / टि0ग0 / 10 / आर0टी0आई0–42 / 2024–25 / 462	ग्रामीण	06	09	18	32	23
			शहरी	02	00	01	07	11
02.	सामु0 स्वा0 केन्द्र कपकोट	सू0का अधि0 / 2024–25 / 1107	ग्रामीण	08	26	24	23	28
			शहरी	00	00	00	00	00
03.	मुख्य चि0 अधिकारी उधमसिंह नगर	सू0अ0 / 171 / 2024–25 / 14629	ग्रामीण	45	48	201	243	108
			शहरी	11	12	37	20	23
04.	मुख्य चि0 अ0 अल्मोड़ा	880 / 6(1) सू0काअ0 / 2024–25 / 17932	ग्रामीण शहरी	17	39	44	72	11
05.	सामु0 स्वा0 केन्द्र सहसपुर दे0दून	सी0एच0सी0 / सू0अधि0 / 2024–25 / 738	ग्रामीण	06	04	15	49	23
			शहरी	0	0	00	00	05

06.	रा0 सं0 चिकि0 प्रेमनगर, दे0दून	प्रेमनगर / सू0अधि0 / 2024–25 / 136	ग्रामीण	01	0	00	00	00
			शहरी	00	0	0	0	0
07.	सामु0 स्वा0 केन्द्र सहिया दे0दून	चि0अ0 / सी0एच0सी0 / सू0अ0 / 2023–24 / 1460	ग्रामीण	0	0	0	0	0
			शहरी	0	0	0	0	0
08.	दी0द0 उपा0 रा0 चिकि0 दे0 दून	–	ग्रामीण	0	0	0	0	0
			शहरी	1	4	5	5	5
09.	सामु0 स्वा0 केन्द्र चकराता दे0दून	सी0एच0सी0 / सू0अ0अधि0 / 2023–24	ग्रामीण	11	15	15	20	10
			शहरी	0	0	0	0	0
10.	प्रा0 स्वा0 केन्द्र कालसी दे0दून	पी0एच0सी0 / सू0का अधि0 / 2023–24 / 64	ग्रामीण	04	03	06	20	22
			शहरी	0	0	0	0	0
11.	उप जि0 चिकि0 मसूरी	उ0जि0चि0 / सू0अ0 / 2024–25 / 23	ग्रामीण	0	0	0	0	0
			शहरी	1	5	4	8	6
12.	सामु0 स्वा0 केन्द्र डोईवाला दे0दून	सू0अ0 / 2023–24 / 642	ग्रामीण	08	11	09	18	19
			शहरी	12	16	16	27	21
13.	जिला चिकि0 गोपेश्वर, चमोली	सू0अ0 / जि0चि0गो0 / 2024–25 / 794–95	ग्रामीण	09	04	03	05	01
			शहरी	02	01	02	01	01
14.	सामु0 स्वा0 केन्द्र अगस्त्यमु0 रुद्रप्रयाग	सी.एच.सी. / सू.अ. / 2024–25 / 149	ग्रामीण	08	18	13	13	07
			शहरी	04	07	04	06	03
15.	सामु0 स्वा0 केन्द्र जखोली रुद्रप्रयाग	सू0अ0 / 2024–25 / 55	ग्रामीण	08	18	13	13	07
			शहरी	0	0	0	0	0
16.	सामु0 स्वा0 केन्द्र ज्योतिर्मठ रुद्रप्रयाग	सू0अ0 / 2024–25 / 489–90	ग्रामीण	02	03	09	05	05
			शहरी	0	0	03	04	02

17.	मु0चि0अ0 पिथौरागढ़	एन0एच0एम0 / सू0अ0 / 2024–25 / 729	ग्रामीण	38	31	22	23	08
			शहरी	02	33	27	15	03
18.	जि0 चि0 बागेश्वर	सू0अ0अधि0 / 2022–23 / 2246–47	ग्रामीण	11	12	05	09	02
			शहरी	0	0	02	01	0
19.	उप0जि0 चि0 टनकपुर, चम्पावत	सू.अ. / 2024–25 / 111	ग्रामीण	01	01	01	01	01
			शहरी	0	0	0	0	0
20.	प्रा0स्वा0 केन्द्र, पाटी, चम्पावत	सू.अ. / 2024–25	ग्रामीण	15	08	18	19	17
			शहरी	0	0	0	0	0
21.	मु0 चि0 अ0 कर्णप्रयाग, चमोली	सू0 का अ0 अधि0 / 2025 / 2878	ग्रामीण	05	02	03	00	04
			शहरी	00	02	04	02	03
22.	मु0 चि0 अ0 पौड़ी गढ़0	सू0अ0अधि0 / 50 / 2024–25	ग्रामीण शहरी संयुक्त	29	159	127	165	100
23.	प्रमुख चि0 अधि0 उत्तरकाशी	सू0अ0 / 2025–26 / 27	ग्रामीण शहरी संयुक्त	17	08	12	06	07
24.	उप जि0 चिकित्सालय विकासनगर, दे0दून	उपजिलाचि / सू0अधि0 / 2024–25 / 156	ग्रामीण	09	08	11	20	19
			शहरी	00	01	02	04	00
25.	महानि0 चि0स्वा0 एवं परि0 क0 विभा0 उत्तराखण्ड	21प / जन्म–मृत्यु / सू0अ0 / 1 / 2017 / 5178	ग्रामीण	0	0	0	0	0
			शहरी	604	673	559	865	0

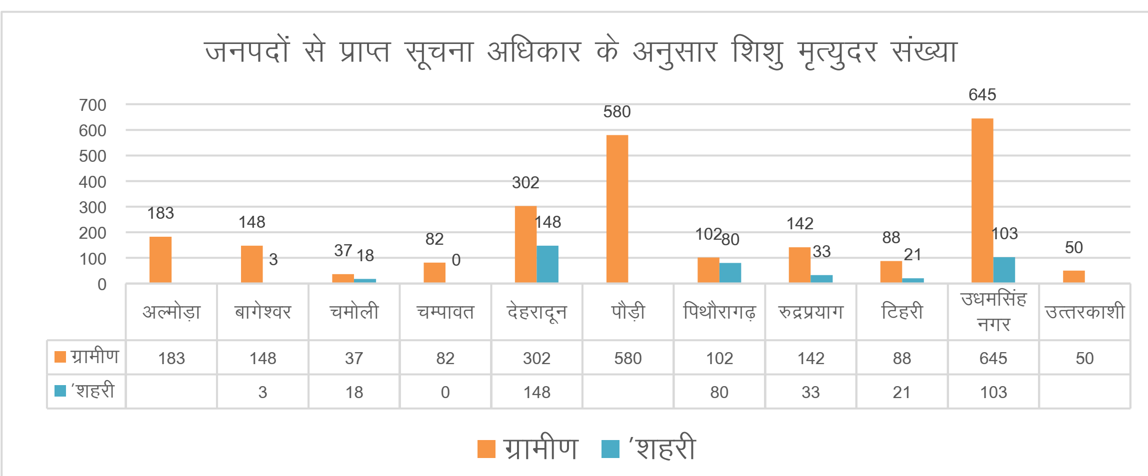

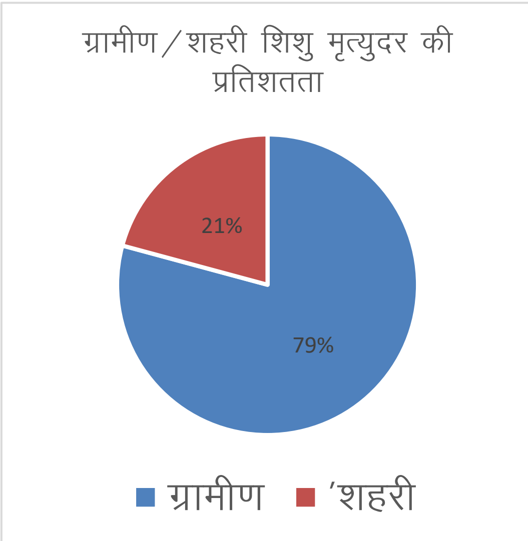

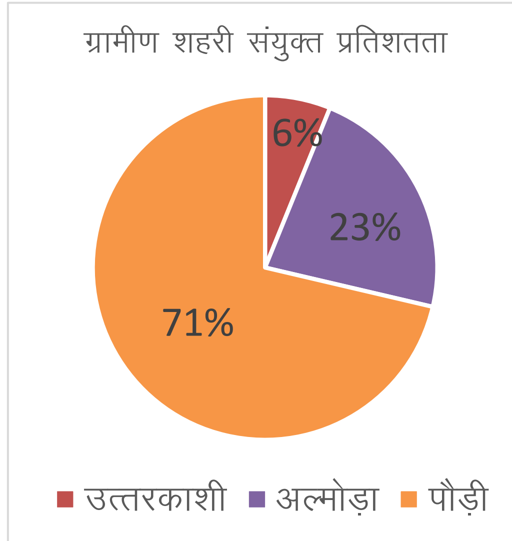

शोध संसाधन

ज्योतिष शास्त्र के श्री नारदीय जातकम्, बृहत्पराशर होराशास्त्र, बृहज्जातकम्, सारावली, जातकपारिजात, जातक दीपिका, फलदीपिका, लघुजातकम्, सर्वार्थ चिन्तामणि, जातक सारदीप, जातकाभरण, मानसागरी, प्रश्नमार्ग, पंचस्वरा आदि प्राचीन ग्रन्थ एवं आयु निणर्य (श्री मुकुन्द दैवज्ञ), शिशु–चिन्तन, जातक सारावली, आयु अरिष्ट एवं अष्टम चन्द्र, आयु निणर्य (श्री गिरीश चन्द्र जोशी), बालारिष्ट–विज्ञान एवं समाधान आदि आधुनिक पुस्तकों को द्वितीयक आँकडों के लिए आंकड़े संग्रहण के श्रोत के रुप में ग्रहण किया गया।

प्राथममिक आँकडों के श्रोत के रुप में विभिन्न व्यक्तियों से सम्पर्क कर उनके साथ साक्षात्कार, सर्वेक्षण एवं सम्पूरित प्रश्नावलियों को ग्रहण किया गया है।

शोध के उद्देश

किसी भी कार्य को करने के पीछे कोई ना कोई उद्देश्य अवश्य सन्निहित होता है। उसी प्रकार से एक उत्तम शोध कार्य के भी कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं।

शिशुओं की मृत्यु व मृत्यु तुल्य कष्टों में अनेक कारण होते हैं। जिनमें जन्मकालिक अशुभ ग्रहयोग, जन्मकालिक अशुभ स्थितियां एवं ग्रहणादि काल भी उत्तरदायी हैं। अतः प्रस्तुत शोधकार्य नवजात शिशुओं के जन्मांगों पर अरिष्ट योगों, जन्मकालिक अशुभ स्थितियों एवं उन से घटित

होने वाले अशुभ फलों के विश्लेषण, अरिष्ट निवारण के लिए वर्णित उपायों की समीक्षा के उद्देश्य से किया जा रहा है।

शोध का शैक्षणिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में योगदान

प्रत्येक विषय का शिक्षा क्षेत्र से घनिष्ट सम्बन्ध होता है, वर्तमान समय में अनेकों विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में ज्योतिष का अध्ययन–अध्यापन किया जा रहा है। इस विषय में यदि प्राचीन ज्ञान का संशोधन एवं नवीन ज्ञान को समावेशित जाता है तो इससे ज्योतिष के अध्यापक एवं अध्ययनकर्ताओं को सुगमता होती है। ज्योतिष शास्त्र में शोध शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक लाभप्रद होगा। अरिष्ट के सन्दर्भ में किये जा रहे शोध से प्राचीन एवं नवीन आचार्यों के मतों का संग्रहण व समीक्षात्मक अध्ययन किया मेरे द्वारा किया गया है। जिससे भविष्य में अध्ययन कर्ताओं को अरिष्ट योग विषयक अध्ययन करने में सुगमता होगी, तथा इस शोध से उन्हें लाभ प्राप्त होगा।

प्राचीन काल से अद्यावधि पर्यन्त होराशास्त्र के विभिन्न विषयों में शोध कार्य किये जा रहे हैं, जिससे मानव समाज निरन्तर लाभान्वित हो रहा है। क्योंकि पूर्वार्जित कर्मों के शुभाशुभ फलों को ज्ञात करने हेतु सुगम साधन ज्योतिष शास्त्र की होरा शाखा ही है। तथा यह शाखा मानवमात्र के लिए अत्यन्त कल्याण कारक है, अतः इस शाखा के प्राचीन आचार्यों द्वारा ग्रन्थों में उल्लिखित अरिष्ट व अरिष्टभंग योगों से सम्बन्धित गूढ़ रहस्यों पर समीक्षात्मक शोध समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध की उपयोगिता एवं लाभ–

शिशुओं को जीवन में बहुत बार अकारण ही अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है, तथा कई बार मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट भी प्राप्त होते हैं।

एवं बहुतायत यह भी देखने को मिलता है कि व्यक्ति के जन्मांग में अरिष्टयोगों की उपस्थिति के पश्चात भी जातक स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन व्यतीत करता है। इस प्रकार के विशद विषय पर शोध की नितान्त आवश्यकता है, जिससे कि अध्ययन कर्ताओं को अरिष्ट विषयक विवेचन करने में सुगमता प्राप्त हो सके।

प्रस्तुत शोध में अरिष्ट के कारक–कारण–समय के साथ अरिष्टभंग योगों व अरिष्ट शान्ति के विभिन्न शास्त्रोक्त उपायों को भी समाहित किया गया है। जिससे कि शोध अत्यन्त उपयोगी व आम जनमानस के साथ ज्योतिष क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों एवं ज्योतिष के अध्ययन कर्ताओं के लिए निश्चय ही अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होगा।

अध्याय विभाजन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है–

01. **प्रथम अध्याय** में अरिष्ट का परिचय व स्वरुप के साथ ज्योतिष शास्त्र का संक्षिप्त परिचय, अरिष्ट के भेद एवं अरिष्ट का जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया गया है।
02. **द्वितीय अध्याय** में कितने वर्षों तक बालारिष्ट प्रभावी होता है, बालारिष्ट में कब अरिष्ट होगा व बालारिष्ट की ऐतिहासिक परम्परा को वर्णित किया गया है।
03. **तृतीय अध्याय** में बालारिष्ट कारक प्रमुख ग्रह, बालारिष्ट में चन्द्रमा की भूमिका, बालारिष्ट के प्रमुख ग्रहयोगों के साथ उन आधारभूत सिद्धान्तों पर प्रकाश ड़ाला गया है जो कि बालारिष्ट निर्धारण करने में महत्पूर्ण भूमिका निर्वहन करते हैं।
04. **चतुर्थ अध्याय** में बालारिष्ट भंग परिचय, बालारिष्ट भंग का आधार, बालारिष्टभंग के प्रमुख ग्रहयोग व जन्मांगों में बालारिष्ट योगों का प्रायोगिक अध्ययन किया गया है।
05. **पंचम अध्याय** में निष्कर्ष के रुप में सर्वेक्षण में प्राप्त घटित बालारिष्ट योगों, नूतन बालारिष्ट योगों के साथ बालारिष्ट निवारणार्थ शास्त्रीय उपायों का विवेचन किया गया है।

अन्त में शोध प्रबन्ध लेखन की उपलब्धि के रूप में उपसंहार दिया गया है। जिसमें सम्पूर्ण शोध में प्राप्त निष्कर्ष पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है। साथ ही शोध के दौरान अध्ययन किये गये सहायक ग्रन्थों की सूची को भी प्रस्तुत किया गया है।

❀❀✵❀❀